पं0 विष्णु दिगम्बर पलुस्कर की जीवनी एवं भारतीय संगीत में योगदान

पं0 विष्णु दिगम्बर पलुस्कर हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में एक विशिष्ट प्रतिभा थे। इनका जन्म 18 अगस्त सन् 1872 ई0 को बंबई के कुरुन्दवाड़ जिला बेलगांव में श्रावण पूर्णिमा के दिन हुआ था। इनके पिता का नाम श्री दिगम्बर गोपाल तथा माता का नाम श्रीमती गंगादेवी था। बचपन में पटाखा फटने के कारण इनकी आंखों की रोशनी चली गई थी, जिसके कारण इनकी स्कूली शिक्षा नही हो सकी।

आंखों की रोशनी जाने के बाद उपचार के लिए वह समीप के मिरज राज्य चले गए। मिरज रियासत के सुप्रसिद्व गायक बालकृष्ण बुआ इचलकरंजीकर की छत्रछाया में इनकी संगीत की शिक्षा प्रारंभ हुई। लगभग 11 वर्ष निरंतर साधना करने के बाद यह एक सिद्व और कुशल कलाकार बन गये। पलुस्कर को घर में संगीत का माहौल मिला था। क्योंकि उनके पिता दिगम्बर गोपाल पलुस्कर धार्मिक भजन और कीर्तन गाते थे। 15 वर्ष की अवस्था में इनका विवाह श्रीमती रमाबाई के साथ हो गया।

पलुस्कर ने धनार्जन के लिए संगीत के सार्वजनिक कार्यक्रम भी किए। स्वतंत्रता संग्राम के दिनों में महात्मा गांधी की सभाओं सहित विभिन्न मंचों पर रामधुन गाकर हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत को लोकप्रिय बनाया। उन्होंने भक्ति संगीत की कला में महारत हासिल की और भजन रघुपति राघव राजा राम को अपनी मौजूदा संगीत सामग्री में शामिल किया। वह भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सत्र में भाग लेते थे और अपने संगीत आकर्षण

की ताकत से भीड़ को जगाते थे।

पलुस्कर संभवतः पहले ऐसे शास्त्रीय गायक हैं, जिन्होंने संगीत के सार्वजनिक कार्यक्रम आयोजित किए। बाद में पलुस्कर मथुरा आए और उन्होंने शास्त्रीय संगीत की बंदिशें समझने के लिए ब्रज भाषा सीखी। बंदिशें अधिकतर ब्रजभाषा में ही लिखी गई हैं। इसके अलावा उन्होंने मथुरा में ध्रुपद शैली का गायन भी सीखा।

इन्होने भारतीय संगीत में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। विष्णु दिगम्बर पलुस्कर मथुरा के बाद पंजाब घूमते हुए लाहौर पहुंचे और 1901 में उन्होंने गंधर्व महाविद्यालय की स्थापना की जो अब विकसित होकर एक महान संगीत संस्था के रुप में संगीत की सेवा कर रहा है। इसकी शाखाएं सम्पूर्ण भारत में फैली हुई है, जिनके द्वारा हजारों विद्यार्थी संगीत ज्ञान प्राप्त कर रहे है। इस विद्यालय के जरिए उन्होंने कई संगीत विभूतियों को तैयार किया। पलुस्कर के शिष्यों में पंडित ओंकारनाथ ठाकुर, पंडित विनायक राव पटवर्धन, पंडित नारायण राव और उनके पुत्र दत्तात्रेय विष्णु पलुस्कर जैसे दिग्गज गायक शामिल थे। विद्यालय चलाने के लिए उन्हें बाज़ार से कर्ज़ लेना पड़ा। बाद में उन्होंने मुंबई में अपना विद्यालय स्थापित किया। पलुस्कर ने लाहौर में गन्धर्व विद्यालय की स्थापना कर भारतीय संगीत को एक विशिष्ट स्थान दिया। इसके अलावा उन्होंने अपने समय की तमाम धुनों की स्वरलिपियों को संग्रहित कर आधुनिक पीढ़ी के लिए एक महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने गंधर्व महाविद्यालय के लिए एक बड़ी संख्या में पाठ्य पुस्तकों को प्रकाशित किया, जो आज संगीत के लिए एक धरोहर के रुप में समझे जाते है। इनकी अधिकतर पुस्तके धार्मिक भावनाओं से ओतप्रोत है। इनके गीतों में भक्तिरस के साथ–साथ राष्ट्रीय भावना भी पाई जाती है। इन्होंने कला को नैतिकता के साथ सम्बद्ध करने का सफल

प्रयत्न किया। मुगलकालीन विलासिता के रंग में रंगे हुए कुरुचिपूर्ण गीतों का रुप बदलकर सूर, मीरा, तुलसी आदि भक्त कवियों की रचनाओं को शास्त्रीय संगीत की गायनशैली में लाकर सभ्य समाज में संगीत के प्रति एक महान आस्था स्थापित कर दी। इन्होंने ध्रुपद, धमार, तराने की रचनाएं की और पाश्चात्य स्वरलिपि के आधार पर नयी स्वरलिपि की रचना की। उन्होंने तीन खंडों में संगीत बाल प्रकाश नामक पुस्तक लिखी और 18 खंडों में रागों की स्वरलिपियों को संग्रहित किया। सन् 1900 के लगभग इन्होंने सर्वांग पूर्ण संगीतलिपि का निर्माण किया। रागप्रवेश, संगीत बालप्रकाश, संगीत बालबोध, बिहाग, कल्याण, भूपाली, मालकौंस रागों का संपूर्ण गायकी सहित पुस्तकें, स्वल्पालाप गायन, टप्पा गायन, होरी गायन, मृदंग तबला.पाठ्यपुस्तक, सितार पाठ्यपुस्तक, भजनामृत लहरी, रामनामावली, संगीतनामस्मरणी, भक्तप्रेमलहरी, भजनावली, रामगुणगान मराठी, बंगाली गायन, कर्णाटक संगीत, व्यायाम के साथ संगीत, महिला संगीत, राष्ट्रीय संगीत, भारतीय संगीत लेखन पद्धति, संगीत तत्त्वदर्शक, अंकित अलंकार, इनकी प्रमुख रचनाए है। आपने जनसाधारण में संगीत ज्ञान की वृद्धि के लिए संगीतामृत प्रवाह नामक मासिक पत्रिका भी निकाला था। जीवन के अन्तिम काल में पलुस्कर जी की धार्मिक प्रवृत्ति और अधिक जाग्रत हो गई थी और इन्होंने सन् 1925 में 'राम नाम आधार' नामक एक आश्रम की स्थापना की। सन् 1930 ई0 में पं0 जी को लकवा का प्रभाव हो गया जिससे वे अस्वस्थ रहने लगे। 21 अगस्त 1931 को संगीत के इस महान साधक का निधन हो गया। पं0 जी की स्मृति में प्रत्येक वर्ष अनेक नगरों में उनकी पुण्यतिथि पर उत्सव तथा कार्यक्रम प्रस्तुत किये जाते है। आपकी संगीत सेवायें तथा देन इतनी अधिक है कि उन्हें कभी भी

भुलाया नहीं जा सकता है।